11/12/24

[This question paper contains 2 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **1692** **I**

Unique Paper Code : 2052103501

Name of the Paper : **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

निर्देश :

(क) इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(ख) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के अनुसार त्रासदी को पारिभाषित करते हुए उसके तत्वों का निरुपण कीजिए। 18

अथवा

लोंजाइनस के उदात्त सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए।

2. कॉलरिज के कल्पना सिद्धान्त का विश्लेषण कीजिए। 18

P.T.O.

अथवा

'कविता व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, व्यक्तित्व से पलायन है।' इस कथन के संदर्भ में टी.एस. इलियट के निर्वैयक्तिकता के सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए।

3. स्वच्छंदतावाद की अवधारणा पर विचार कीजिए। 18

अथवा

संरचनावाद का विश्लेषण कीजिए।

4. बिम्ब की परिभाषा देते हुए काव्य में उसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए। 18

अथवा

विसंगति और विडम्बना की अवधारणा को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 9+9=18

(क) अनुकरण सिद्धान्त

(ख) वड्र्सवर्थ की काव्य भाषा विषयक मान्यता

(ग) यथार्थवाद

(घ) फैंटेसी

***

20/12/24

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **1745** **I**

Unique Paper Code : 2052103502

Name of the Paper : आधुनिक हिंदी कविता (छायावादोत्तर)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

निर्देश :

(क) इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(ख) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **दो** काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 8×2=16

(क) यहाँ हर्ष-विषाद, चिंता - क्रोध,
यहाँ है सुख-दुख का अवबोध
यहाँ प्रत्यक्ष औ अनुमान
यहाँ स्मृति-विस्मृति सभी के स्थान
तभी तो तुम याद आती, प्राण,
हो गया हूँ मैं नहीं पाषाण।

P.T.O.

अथवा

यह मधु है : स्वयं काल की मौना का युग-संचय,
यह गोरस : जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय,
यह अंकुर : फोड़ धरा को, रवि को तकता निर्भय,
यह प्रकृत, स्वयम्भू, ब्रह्म, अयुत इसको भी शक्ति को दे दे।

(ख) कविता को
बिखरा कर देखने से
सिवा रेशों के क्या दिखता है
लिखने वाला तो
हर बिखरे अनुभव के रेशे को
समेट कर लिखता है।

अथवा

बचाना है -
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुआँ हो जाने से
खाने को जहर हो जाने से :
बचाना है - जंगल को मरुथल हो जाने से,
बचाना है - मनुष्य को जंगल हो जाने से।

2. 'नागार्जुन सच्चे अर्थों में जन कवि है' – स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं का मूल स्वर स्पष्ट कीजिए।

3. 'यह दीप अकेला' कविता का मूल भाव क्या है ? 15

अथवा

'रामदास' कविता अपने समय और समाज का आईना है – विचार कीजिए।

4. 'गीतफ़रोश' कविता सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था पर प्रहार एवं कलाकार की दुर्दशा का आईना है – विचार कीजिए। 15

अथवा

कवि जगदीश गुप्त की काव्य-भाषा का वर्णन कीजिए।

5. कुँवर नारायण की कविता गहरे सामाजिक संदर्भों से आबद्ध है – स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'पानी की प्रार्थना' कविता की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 7+7=14

(i) रघुवीर सहाय की कविताओं में स्त्री जीवन का संघर्ष

(ii) 'उनको प्रणाम' कविता की मूल संवेदना

(iii) 'आस्था' कविता का मूलभाव

(iv) 'एक अजीब-सी मुश्किल' कविता का प्रतिपाद्य

***

26/12/24

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **1801** **I**

Unique Paper Code : 2052103503

Name of the Paper : Hindi Aalochna

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

निर्देश :

(क) इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(ख) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए। 10+10+10=30

(क) प्राचीनकाल के अभिनयादि के सम्बंध में तात्कालिक कवि लोगों की और दर्शक मंडली की जिस प्रकार रुचि थी वे लोग तदनुसार ही नाटकादि दृश्यकाव्य रचना कर के सामाजिक लोगों का चित्त विनोद कर गये हैं, किन्तु वर्तमान समय में इस काल के कवि तथा सामाजिक लोगों की रुचि उस काल की अपेक्षा अनेकांश में विलक्षण है इससे संप्रति प्राचीन मत अवलम्बन करके नाटक आदि दृश्यकाव्य लिखना युक्तिसंगत नहीं बोध होता।

P.T.O.

अथवा

मौलिकता कथानक में नहीं है, उस कथानक से सिरजा क्या गया है, उसमें है।

इस दृष्टि से 'शक्तिपूजा' में शक्ति-संधान की रचनात्मक व्याख्या है और इसका मूल सूत्र उस परामर्श में है, जो जाम्बवान पराजय की मनःस्थिति में डूबे राम को देते हैं – 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना'। अर्थात् शक्ति का संधान मौलिक रूप में ही संभव है, अनुकरणात्मक रूप में नहीं। 'कामायनी' के मनु और 'शक्तिपूजा' के राम की हताश मनःस्थिति एक जैसी है।

(ख) अगर कविता को शब्दों की मीनाकारी ही मान लिया जाये तब यह संगत भी है। 'तार सप्तक' की कविता वैसी जड़ाऊ कविता नहीं है, वह वैसी हो भी नहीं सकती। जमाना था जब तलवारें और तोपें भी जड़ाऊ होती थीं, पर अब गहने भी धातु को सांचों में ढालकर बनाये जाते हैं और हीरे भी तप्त धातु की सिकुड़न के दबाव से बँधे हुए कणों से। 'तार सप्तक' में रूप सज्जा को गौण मानकर अधिक से अधिक सामग्री देने का उद्‌योग किया गया। इसे पाठक के प्रति ही नहीं, लेखक के प्रति भी कर्तव्य समझा गया।

अथवा

तुलसीदास ने राम और सीता के विवाह में यह दिखलाया है कि विवाह प्रेम की परिणति है। यद्‌यपि सीता की प्रीति पुरातन है, फिर भी लोक-व्यवहार की दृष्टि से कंकन किंकिन नूपुर धुनि में राम का मदन दुन्दुभी सुनना, सियमुख की तरफ नयन चकोरों का

देखना, और सीता द्वारा राम को हृदय में बिठाकर पलक-कपाट लगा देना आदि क्रियाओं का वर्णन तुलसी के मर्मी कवि हृदय का परिचय ही नहीं देता, उनके रूढ़ियों को तोड़ने वाले साहस का भी परिचय देता है। तुलसी केवल भक्त नहीं है, वे प्रेम और सौन्दर्य के कवि भी हैं।

(ग) एक ही घटना या स्थिति से सभी मनुष्य समान रूप में प्रभावित नहीं होते। हर आदमी की मनोवृत्ति और दृष्टिकोण अलग है। रचना कौशल इसी में है कि लेखक जिस मनोवृत्ति या दृष्टिकोण से किसी बात को देखे पाठक भी उसमें उससे सहमत हो जाए। यही उसकी सफलता है। इसके साथ ही हम साहित्यकार से भी आशा रखते हैं कि वह अपनी बहुज्ञता और अपने विचारों की विस्तृति से हमें जागृत करें, हमारी दृष्टि मानसिक परिधि को विस्तृत करें - उसकी दृष्टि इतनी सूक्ष्म, इतनी गहरी और इतनी विस्तृत हो कि उसकी रचना से हमें आध्यात्मिक आनन्द और बल मिले।

अथवा

कवि सौन्दर्य से प्रभावित रहता है और दूसरों को भी प्रभावित करना चाहता है। किसी रहस्यमयी प्रेरणा से उसकी कल्पना में कई प्रकार के सौन्दर्यों का जो मेल आप से आप हो जाया करता है उसे पाठक के सामने भी प्रायः रख देता है जिस पर कुछ लोग कह सकते हैं कि ऐसा मेल क्या संसाद में बराबर देखा जाता है। मंगल-शक्ति के अधिष्ठान राम और कृष्ण जैसे पराक्रमशाली और धीर है वैसा ही उनका रूप-माधुर्य और उनका शील भी लोकोत्तर है। लोक-हृदय आकृति और गुण, सौन्दर्य और सुशीलता, एक ही अधिष्ठान में देखना चाहता है।

2. हिंदी आलोचना के विकास को रेखांकित कीजिए ? 15

अथवा

शुक्लोत्तर हिंदी आलोचना पर प्रकाश डालिए ?

3. 'नाटक' पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए ? 15

अथवा

'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' पाठ के आधार पर रामचंद्र शुक्ल की आलोचना दृष्टि का विवेचन कीजिए ?

4. 'तार सप्तक की भूमिका' में अज्ञेय द्वारा प्रस्तावित नये साहित्यिक प्रतिमानों के स्वरूप पर विचार कीजिए ? 15

अथवा

'आधुनिक साहित्य : नई मान्यताएं' पाठ के आधार पर हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि का विश्लेषण कीजिए ?

5. 'रेणु : समग्र मानवीय दृष्टि' पाठ के आधार पर निर्मल वर्मा के साहित्य संबंधी चिन्तन को स्पष्ट कीजिए ? 15

अथवा

'निराला' पाठ का मूल कथ्य उद्घाटित कीजिए।

***

31/12/24

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2006 **I**

Unique Paper Code : 2053100009

Name of the Paper : हिंदी यात्रा साहित्य

Name of the Course : **B.A. (Hons.) HINDI – DSE**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की व्याख्या कीजिए : (8+8=16)

(क) किन्नर देवताओं का देश है, अलंकारिक नहीं सीधी भाषा में। देवता प्रकाश के प्राणी कहे गये है, किन्तु मैं समझता हूँ वह घोर अंधकार वासी हैं। जब तक मनुष्य के हृदय में घोर अज्ञान न हो देव लोग वहाँ ठहरना नहीं चाहते। कल (23 मई) दो

P.T.O.

मील नीचे कोठी की देवी का मेला था। देवी-देवताओं के लिए हर महीने मेला या भोज होता रहता है। कहीं-कहीं तो मेले के समय देवता के भण्डार से शराब की सदाव्रत भी दी जाती है। नहीं दी जाये, तो भी देवताओं का मेला शराब के विना कैसे हो सकता है? देवताओं ने शराबबंदी हटाने के लिए राजा को मजबूर किया उसके कुल तक को नष्ट कर देना चाहा।

अथवा

"यायावर पुराविद् नहीं होते, न पुरातत्व उनके लिए स्वयं एक साध्य होता है - वह केवल दूसरों के संचित अनुभव के फल के रूप में महत्व रखता है। यह महत्व कम नहीं है, और यह कथन पुरातत्व को अवज्ञा तो कदापि नहीं है। तक्षशिला, नालन्दा, सारनाथ, ये नाम यायावर के शरीर में पुलक उत्पन्न करते हैं किन्तु इसलिए नहीं कि वे प्राचीन खंडहरों के नाम हैं, वरन् इसलिए कि ये सांस्कृतिक विकास के समष्टि के अनुभव पर आधारित जीवन की उन्नततर परिपाटियों के आविष्कार के-कीर्ति-स्तम्भ हैं। अन्ततोगत्वा बात एक ही है, किन्तु एक नहीं भी है। भेद आत्यन्तिक वस्तु का नहीं है, केवल दृष्टिकोण का है, वस्तु से व्यक्ति के सम्बन्ध का भेद है।

(ख) इन पहाड़ों के पीछे न जाने क्या होगा? जब हम छोटे थे, तो अपने घर के बरामदे में खड़े होकर अक्सर एक-दूसरे से यह प्रश्न पूछा करते थे। उन दिनों छुट्टी लेकर पहाड़ों पर जाने की

जरूरत महसूस नहीं होती थी - वे हमेशा हमारे संग थे, हमारे खेतों में, हमारे सपनों में। तब पहाड़ों की शक्ल, उनकी भाव-भंगिमा बिलकुल अलग, दूसरी किस्म की थी, जैसे माँ की शक्ल जो बच्चों की आँखों में होती है, वह दूसरों के लिए नहीं होती।उसकी पहचान ही अलग होती है।

अथवा

आज तो उमानन्द जनविहीन-सा दिख रहा है किन्तु शिवरात्रि पर यहाँ ऐसा जन-अरण्य लगता है कि साथ छुट जाए तो साथी को ढूँढते ही रहिये। शिवरात्रि को सूर्योदय से पहले ही दर्शनार्थियों का यहाँ ताँता लग जाता है सैकड़ो नाव-जहाज श्रद्धालुओं को ले जाने, लाने के काम में देर रात तक जुटे रहते हैं। वैसे ये तीनों द्वीप आसपास ही हैं, जहाँ नाव द्वारा कभी-भी जाया जा सकता है परन्तु वर्षाऋतु में जाना श्रेयस्कर है, तब ब्रह्मपुत्र उफान पर होता है।

2. यात्रा साहित्य का अर्थ समझाते हुए, इसके तत्वों का उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

यात्रा साहित्य को परिभाषित करते हुए इसका महत्व बताइए।

3. **यात्रा साहित्य समाज और संस्कृति को समझने में कैसे सहायक है? स्पष्ट कीजिए।** (15)

P.T.O.

(6)

अथवा

स्वतंत्र्योत्तर हिन्दी यात्रा साहित्य का सामान्य परिचय दीजिए।

4. हिंदी यात्रा साहित्य में राहुल सांकृत्यायन के योगदान को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'अरे यायावर रहेगा याद' यात्रा-वृत्तांत के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालिए।

5. निर्मल वर्मा कृत चीड़ों पर चाँदनी यात्रा-वृत्तांत के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

'कामाख्या क्षेत्रे गुवाहाटी नगरे यात्रा वृत्तांत का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

6. **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7 + 7 = 14)

(क) द्विवेदी युगीन यात्रा साहित्य

(ख) चीड़ों पर चाँदनी में प्रकृति चित्रण

(ग) यात्रा और यायावर

(घ) यात्रा-साहित्य की विशेषताएँ

[This question paper contains 2 printed pages.] 20/12/24

Your Roll No.....

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 6610 **I**

Unique Paper Code : 12051501

Name of the Paper : Pashchatya Kavyashastra

Name of the Course : **HINDI (Hons.)**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के विरेचन सिद्धांत का विवेचन कीजिए । (12)

अथवा

लोंजाइनस के उदात्त की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसके स्रोत पर प्रकाश डालिए ।

P.T.O.

2. वर्ड्सवर्थ की कविता सम्बन्धी मान्यताओं पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

टी. एस. इलियट के निर्वैयक्तिकता संबंधी सिद्धांत की विवेचना कीजिए।

3. मार्क्सवादी आलोचना पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

उत्तर संरचनावाद का सामान्य परिचय दीजिए।

4. फैंटेसी का स्वरूप स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

बिंब से आप क्या समझते है ? बिंब और प्रतीक में अंतर स्पष्ट कीजिए ।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए (9,9,9)

(क) अनुकरण सिद्धांत

(ख) कॉलरिज की काव्य भाषा

(ग) स्वछंदतावाद

(घ) वस्तुनिष्ठ सह - संबंध

(ङ) मिथक

17/12/24

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **6655** **I**

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिंदी नाटक/एकांकी

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 9×3=27

(क) जेहि छिन बलभारे हे सबै तेग धारे ।
तब सब जग धाई फेरते हे दुहाई ।।
जग सिर पग धारे धावते रोस भारे ।
विपुल अवनि जीती पालते राजनीति ।।
जग इन बल काँपै देखिकै चण्ड दापै ।।
सोई यह प्रिय मेरे ह्वे रहे आज चेरे ।।

P.T.O.

6655

अथवा

हाँ, सुनिए। फूट, डाह, लोभ, भय, उपेक्षा, स्वार्थपरता, पक्षपात, हठ, शोक, अश्रुमार्जन और निर्बलता इन एक दूरजन दूती और दूतों को शत्रुओं की फौज में हिला - मिलाकर ऐसे पंचामृत बनाया कि सारे शत्रु बिना मारे घण्टा पर के गरुड़ हो गए। फिर अन्त में भिन्नता गई। इसने ऐसा सबको काई की तरह फाड़ा कि भाषा, धर्म, चाल, व्यवहार, खाना; पीना सब एक - एक योजन पर अलग - अलग कर दिया। अब आवें बचा ऐक्य! देखें आ ही के क्या करते हैं!

(ख) भयानक समस्या है। मूर्खों ने स्वार्थ के लिए साम्राज्य के गौरव का सर्वनाश करने का निश्चय कर लिया है ! सच है, वीरता जब भागती है, तब उसके पैरों से राजनीतिक छलछन्द की धूल उड़ती है।

अथवा

मैं अपनी आँखों से अपना वैभव और अधिकार दूसरों को अन्याय से छीनते देख रहा हूँ और मेरी वाग्दत्ता पत्नी मेरे ही अनुत्साह से आज मेरी नहीं रही। नहीं, यह शील का कपट, मोह और प्रवञ्चना है। मैं जो हूँ, वही तो नहीं स्पष्ट रूप से प्रकट कर सका। यह कैसी विडंबना है! विनय के आवरण से मेरी कायरता अपने को कब तक छिपा सकेगी ?

(ग) पच्चीस साल से इस बकरी की खोज हो रही थी। सरकार का खुफिया विभाग, पुलिस, पलटन सब इसे खोज रहे थे। आखिरकार यह बकरी आपके गाँव में मिली है। यह गाँधी जी की बकरी है। गाँधी महात्मा की बकरी है। जिन्होंने आपको इस लाइक बनाया कि आप आज इस तरह शान से खड़े हैं। आपको आज़ादी दिलाई सब लोग प्रेम से बोलिए गाँधी महात्मा की जय !

अथवा

बेटा यह कुटुंब एक महान वृक्ष है। हम सब इसकी डालियाँ हैं। डालियों ही से पेड़ पेड़ है और डालियाँ छोटी हों चाहे बड़ी, सब उसकी छाया को बढ़ाती है। मैं नहीं चाहता, कोई डाली इससे टूटकर पृथक् हो जाए। तुम सदैव मेरा कहना मानते रहे हो। बस यही बात मैं कहना चाहता हूँ ।

2. क्या 'भारत दुर्दशा' नाटक दुखांत है ? युक्तियुक्त विवेचना कीजिए। 12

अथवा

'भारत दुर्दशा' नाटक के मूल कथ्य पर प्रकाश डालिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 12

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी नाटक के नायकत्व पर प्रकाश डालिए।

4. 'बकरी' नाटक में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

नाटक के तत्वों के आधार पर 'बकरी' नाटक की समीक्षा कीजिए।

5. 'स्ट्राइक' एकांकी की मूल संवेदना लिखिए। 12

अथवा

'तीन अपाहिज' एकांकी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

***

20/12/21

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 6768 **I**

Unique Paper Code : 12057505

Name of the Paper : भारतीय साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा **(Bhartiya Sahitya Ki Sankshipt Ruprekha)**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. भारत की भौगोलिक, भाषिक और सांस्कृतिक विविधता पर प्रकाश डालिए । (12)

P.T.O.

अथवा

भारतीय साहित्य की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए उसके आधार-तत्वों की चर्चा कीजिए ।

2. वैदिक साहित्य को परिभाषित करते हुए उसकी विशेषताओं का परिचय दीजिए। (12)

अथवा

पालि साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ स्पष्ट कीजिए ।

3. आधुनिकता-पूर्व मराठी साहित्य की विशेषताएँ लिखिए । (12)

अथवा

आधुनिकता - पूर्व उर्दू साहित्य का स्वरुप बताइए ।

4. भारतीय साहित्य में भक्ति-आंदोलन की भूमिका पर विचार कीजिए । (12)

अथवा

भारतीय साहित्य में नवजागरण की चेतना पर प्रकाश डालिए ।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए :

(i) भारतीय साहित्य का सामासिक रूप

(ii) प्राकृत साहित्य

(iii) बांग्ला साहित्य

(iv) भारतीय साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन

(v) स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य

(vi) भारतीय साहित्य : उत्तर-आधुनिक संदर्भ ।

(9×3=27)

24/12/24

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **6932** **I**

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi, DSE-1**

Semester : V

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(क) इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

(ख) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. स्त्री विमर्श की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्त्रीवादी आंदोलनों पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

दलित विमर्श की वैचारिकी में ज्योतिबा फुले और भीमराव अम्बेडकर के योगदान को परिभाषित कीजिए।

2. किन्हीं **तीन** अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :10×3=30

(क) आदमजात की सृष्टि करने के बाद बिरमा व भैमाता ने अन्य प्राणियों की रचना की। पूरी सृष्टि की रचना करने के बाद बिरमा व भैमाता ने इन्दर की रचना की और उसे अपना धरम-पूत बना लिया और उसी की

माया की विद्या सिखलायी जिससे वह अन्य इंसानों की बनिस्पत अधिक ताकतवर बन गया। जब बिरमा इन्दर को माय का जादूचाला के गुर सिखा रहा था तो लाल माटी के इंसानी जोड़े ने छिप कर उस मन्तर को सुन लिया। यह बात जैसे ही बिरमा को पता चली तो उसने उस जोड़े को शाप दिया कि 'तुमने जादूचाला का मन्तर तो सीख लिया, पर तुमको इसकी अक्ल कलूकाल में ही आ पायेगी।

अथवा

उसने पहली बार अखबारों में छपी उन खबरों को शिद्दत से महसूस किया। जिस पर विश्वास नहीं कर पाता था वह। फलाँ जगह दलित युवक को पीट-पीटकर मार डाला, फलाँ जगह आग में भून दिया। घरों में आग लगा दी। जब-जब भी हरीश इस तरह का समाचार कमल को सुनाता, वह एक ही तर्क दोहरा देता था। "हरीश अपने मन से हीन भावना निकालो। दुनिया कहाँ-से-कहाँ निकल गई और तुम लोग वहीं-के-वहीं हो। उगते सूरज की रोशनी को देखो। अपने आप पर विश्वास करना सीखो। पढ़-लिखकर ऊपर उठोगे तो सब कुछ अपने आप मिट जाएगा।"

(ख) तुम्हारी इस करनी पर
मेरी धमनियों में
खौल रहा है, बहता लहू
समय के साथ
इसका
मैं दूँगा माकूल जवाब
मेरी जगह
पढ़ेंगे मेरे बच्चे
जरूर

अथवा

उसकी आँखों में भर आई एक असहज ख़ामोशी
आह! कैसे कटेगा इस औरत का जीवन!
संशय में पड़ गई वह
समझते हुए सभी कुछ
मैंने उसकी आँखों को अपने अकेलेपन के गर्व से भरना चाहा
फिर हँसकर कहा 'मेरा जीवन तुम्हारा ही जीवन है
मेरी यात्रा तुम्हारी ही यात्रा
लेकिन कुछ घटित हुआ जिसे तुम नहीं जानतीं -
हम सब जानते हैं अब
कि कोई किसी का नहीं होता
सब अपने होते हैं
अपने आप में लथपथ-अपने होने के हक़ के लक़दक़

(ग) मैं कक्षा आठ के साथियों से उम्र और कद दोनों में बड़ा था। बड़े बच्चे के प्रति छात्रों, शिक्षकों और आम लोगों का व्यवहार उपेक्षापूर्ण हो जाता था। कारण उसे मंद बुद्धि मान लिया जाता था। मेरे साथ भी यह घटित होने लगा था, परंतु प्रेमपाल सिंह ने मुझसे कहा था - "जो वर्षों कक्षाओं में रुके होने से बड़े हो जाते हैं और जो पढ़ने के अवसर न मिलने से बड़े होते हैं, इन दोनों की मानसिक दशा में गहरा अंतर होता है। यह बुद्धि का नहीं व्यवस्था का सवाल है।"

अथवा

भारतीय स्त्री की स्थिति में आदिम-युग की स्त्री की परवशता और पूर्ण विकसित समाज के नारीत्व की गरिमा का विचित्र सम्मिश्रण है। उसके प्रति समाज की श्रद्धा की मात्रा पर विचार कर कोई उसे पूर्ण संस्कृत समाज का अंग ही समझ सकता है, परन्तु उसके जीवन का व्यावहारिक रूप एक दूसरी ही करुण गाथा सुनाता है। सम्भवतः उस धर्मप्राण युग ने स्त्री को धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टि से उन्नत स्थान देकर ही अपने कर्तव्य की इति समझ ली; उसकी व्यावहारिक कठिनाइयों की ओर उसका ध्यान ही नहीं जा सका। मातृत्व की गरिमा से गुरु और पत्नीत्व के सौभाग्य से ऐश्वर्यशालिनी होकर भी भारतीय नारी अपने व्यावहारिक जीवन में सबसे अधिक क्षुद्र और रंक कैसे रह सकी, यही आश्चर्य है।

3. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 10×3=30

(क) दलित स्त्रीवाद

(ख) 'खुदा की वापसी' कहानी का प्रतिपाद्य

(ग) क्रांतिवीर मदारी पासी का व्यक्तित्व

(घ) 'क्या तुम जानते हो' कविता की संवेदना

(ङ) आदिवासी विमर्श में जल, जंगल और जमीन के प्रश्न।

(च) 'अन्या से अनन्या' में स्त्री स्वर।

***

24/12/24

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 6934 **I**

Unique Paper Code : 12057505

Name of the Paper : भारतीय साहित्य की संक्षिप्त रूपरेखा **(Bhartiya Sahitya Ki Sankshipt Ruprekha)**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. भारतीय अस्मिता का स्वरूप स्पष्ट करते हुए भाषिक और सांस्कृतिक विविधता पर प्रकाश डालिए । (12)

P.T.O.

अथवा

भारतीय साहित्य का अभिप्राय बताते हुए उसके आधार-तत्वों की विवेचना कीजिए ।

2. भारतीय साहित्य में लौकिक संस्कृत साहित्य के योगदान पर विचार कीजिए । (12)

अथवा

अपभ्रंश साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों को केंद्र में रखते हुए अपभ्रंश भाषा की दो महत्त्वपूर्ण रचनाओं का परिचय दीजिए ।

3. आधुनिकता पूर्व भारतीय साहित्य की अवधारणा को विश्लेषित कीजिए । (12)

अथवा

आधुनिकता पूर्व तमिल साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए ।

4. भारतीय साहित्य में भक्ति आंदोलन के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त कीजिए । (12)

अथवा

नवजागरण की चेतना को स्पष्ट करते हुए भारतीय साहित्य पर पड़ने वाले प्रमुख प्रभावों का वर्णन कीजिए ।

5. **किन्हीं तीन** पर टिप्पणी कीजिए : (9×3=27)

(i) भाषा और संस्कृति का अंतर्संबंध

(ii) वैदिक संस्कृत साहित्य

(iii) मलयालम साहित्य

(iv) बांग्ला साहित्य

(v) स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य

(vi) उत्तर - आधुनिकता की अवधारणा ।